OUR HERITAGE
ISSN (Online) : 0474-9030 Vol-67, Special Issue-11
Impact Factor (2020) - 6.8

साहित्य, संस्कृति और समाज के परिप्रेक्ष्य में मराठवाड़ा की भाषा दक्खिनी हिन्दी

डा. हाशमबेग मिर्झा
कला,विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय नलदुर्ग जि. उस्मानबाद
ई मेल - drmirzahm@gmail.com

सार (Abstract) :

मराठवाड़ा की सांस्कृतिक विरासत विष्व विख्यात है। अनादिकाल से यहाॅ साधू संतों का आवागमन रहा है इसी कारण इसे संतों की भूमि कहा जाता है, यहां के प्रसिध्द संतो में ज्ञानदेव, मुकुंदराज, नामदेव, मुक्ताबाई, गोंदा, एकनाथ, तुकाराम, निपट निरंजन, आदि है। यही कारण है कि भारत में इस्लाम के आगमन के बाद सूफी संतों का सबसे अधिक ध्यान दक्षिण भारत पर गया । दिल्ली से जो 1400 पालकियाॅ दक्षिण भारत आयी थी वे सभी मराठवाडा के औरंगाबाद, दौलताबाद, खुलताबाद में रूकी रही। अर्थात यह केवल हिंदू संतों की भूमि नहीं है बल्कि हिंदू-मुस्लिम सूफी संतों की जन्मभूमि और कर्मभूमि रही है। मराठवाडा के दक्खिनी कवियों में महत्वपुर्ण नाम है, सिराज औरंगाबादी, वली औरंगाबादी, फकीरा, नुरी, अयाज, जुनौदी, राजू कत्याल, आदि। बहुत सारे मुस्लीम संतों ने मराठी में काव्य रचना की है जिसपर मराठी के प्रसिध्द आलोचक डाॅ यू. म. पठाण ने षोधकार्य किया है। उनका ग्रंथ मुस्लीम संतो की मराठी काव्य साधना नाम से प्रकाषित हुआ है जिसे महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृति मंडळ ने प्रकाषित किया। जिसमें षाह मुंतोजी, अंबर हुसेन, षेख महंमद, चांद साहेब कादरी, षहाबेग, षहामुनी, लतीफषाह, षेख सुलतान आदि मुस्लीम संतों की दक्खिनी रचनाओं का परिचय दिया गया। इनकी दक्खिनी हिन्दी की रचनाओं में राष्ट्रीय प्रेम, एकात्मता एवं सामाजिक समन्वय को महत्ता दी गई है।

बीज षब्द (Keywords) :

मराठवाड़ा की भूमि समर्पन, प्रेम, साहित्य, संस्कृति और सौहार्द्र की रही है जो यहाॅ की मिट्टी से जुडा वह यहाॅ की संस्कृति को अपना लेता है। यही हम दक्खिनी की रचनाओं में दिखाई देता है।

भूमिका (Introduction) :

साहित्य का संबंध समाज से होता है वैसे ही समाज और साहित्य को समन्वित रखने का का कार्य वहाॅ की संस्कृति करती है। हिन्दी के प्रसिध्द साहित्यकार एवं भाषाविद् डाॅ विद्यानिवास मिश्र कहतें हैं, साहित्य या समाज झुठ बोल सकता है लेकिन वहाॅ की संस्कृति कभी झुठ नहीं बोल सकती। इसलिए किसी भी क्षेत्र का यथार्थपरक अध्ययन करना हो तो वहाॅ की संस्कृति का अध्ययन करना बेहद जरूरी है। संस्कृति के निर्माण में हजारों वर्षों का समय लगता है। विभिन्न परिस्थितियांे से गुजरता हुआ समाज

जब अपन आपको विशिष्ट बंधनों, परंपराओं, रूढियों में बांधकर एक प्रगत या सभ्य समाज का निर्माण करता है तो उसे एक संस्कृति का नाम दिया जाता है। मराठवाड़ा की संस्कृति भी ऐसे ही निर्माण हुई है। इस संस्कृति के निर्मान में कई संत, साहित्यकार एवं समाज सुधारकों का योगदान रहा है।

भारत और अरब के संबंध इसा पूर्व से ही थे इस बात की पुष्ठि इजिप्त की ममी से मिले मलमल के कपड़े और अरब के खादय पदार्थों में प्रयोग किए जानेवाले मसालों से ही हो जाता है। हादिसात में जिक्र आता है कि हजरत मोहम्मद को भी हिंद से लगाव था। इस कारण उन्होने अपने अनुनायियों (सहाबे कराम) को हिंद भेजा था। जिनमें से चार अनुनायियों का उल्लेख भारत के संबंध आता है 1 मद्रास से 20 कि.मी. दूर समुद्र के किनारे कोअल्लम में हज. तमिम अंसांरी साहब का दरगाह है 2 केरल के कालिकत के पास कडलूरू नामक शहर में 3 कश्मिर के हजरत बल दरगाह में 4 नांदेड अर्धापुर में साहबे रसूल है। यह सभी मुहम्मद साहब के जीवंत समय में भारत आकर शांतीपुर्ण मार्ग से इस्लाम का प्रचार प्रसार कर रहे थे। डॉ. मोहम्मद कुंज मेत्तर आगे लिखते हैं, **दखनी के उदय के वातावरण का निर्माण वास्तव में बहमनी साम्राज्य की स्थापना के कई वर्ष पहले ही हो चुका था। मुसलमान धर्म प्रचारकों और औलियाआंेने दक्खिन में रहकर अपने धर्म तथा सिद्धांतों का प्रचार करना प्रारंभ कर दिया था। इतिहासने इस बात की पुष्टि की है कि, जहां-जहां भारत में मुसलमान आक्रामक गए वहां वहां सूफी फकीर पहले से ही विद्यमान थे हुनावर के शेख मोहम्मद नागुरी का जिक्र इब्नबतूता ने किया है। ख्वाजा मजहीउद्दीन और हजरत नतहरवली का मजार आज भी तिरुचिरापल्ली में मौजूद है। हैदराबाद से 6 मील दक्षिण की ओर हजरत बाबा शरफूद्दीन का मजार एक निर्जन पहाड़ी पर स्थित है जिनकी मृत्यु सन 1288 ई में हुई थी।** 1

मूल विषय प्रतिपादन:

दक्षिण भारत में सबसे महत्वपूर्ण घटना भाषाई परिवर्तन के संबंध में सन 1327 में घटित हुई, जब दिल्ली के शासक मोहम्मद बिन तुगलक ने अपने राजधानी का केंद्र दिल्ली से बदलकर दौलताबाद बनाया। यह दौलताबाद आज के महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर से 6 मील की दूरी पर था, जहां पर देवगिरी नामक प्रशस्त किला है, जिस समय (देवगिरी) दौलताबाद को भारत की राजधानी का दर्जा हासिल हुआ उस समय मोहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली से दौलताबाद के लिए कई व्यापारी, साहित्यकार, मजदूर, सूफी फकीर, उलेमा, कलाकार आदि को अपने साथ लेकर आए किंतु कुछ ही दिनों के उपरांत अपनी दिल्ली की सत्ता को डावांडोल होता देखकर वह वापस लौट गए। इसी का फायदा उठाते हुए दक्षिण में सन 1347 में एक विद्रोही किया गया। यह विद्रोह अब्दुल मुजफ्फर बहमन शाह नामक सरदार ने किया था इसी विद्रोह के परिणाम स्वरुप दक्षिण भारत में बहमनी सल्तनत का निर्माण हुआ। इसने अपनी राजधानी कर्नाटक के गुलबर्गा शहर को बनाई। यह बहमनी शासन लगभग 200 वर्षों तक कायम रहा। आगे चलकर बहमनी साम्राज्य विभाजित हो गया जिससे चार राज्यों की स्थापना हुई। 1 बिदर की बरीद शाही, 2 अहमदनगर की निजामशाही, 3 गोलकुंडा की कुतुब शाही और 4 बीजापुर की आदिलशाही के नाम से जाने जाते हंै।

दक्खिनी हिंदी की पाश्र्वभूमि से लेकर उसकी विकास यात्रा तक यही चार राज्य अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे। इन्हीं चार राज्यों के भीतर दखनी ने जन्म लिया तथा अपने विकास की चरम सीमा को प्राप्त किया।

मराठवाड़ा की भूमि संतों की भूमि रही है, यहां के प्रसिध्द संतो में नामदेव, गोंदा, एकनाथ, सिराज औरंगाबादी, वली औरंगाबादी, फकीरा, नुरी, अयाज, जुनौदी, राजू कत्याल, शाह मुंतोजी, अंबर हुसेन, शेख महंमद, चांद साहेब कादरी, शहाबेग, शहामुनी, लतीफ शाह, शेख सुलतान आदि का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इनकी हिन्दी रचना प्राप्त होती है जो तत्कालीन समय की हिन्दी भाषा अर्थात दक्खिनी में लिखी हुई है।

दक्षिण भारत को मुघल शासक दखन कहा करते थे और इसी प्रदेश में बोली जानेवाली भाषा को दक्खिनी भाषा कहा जाता है। इस भाषा की अपनी अलग विशेषताएँ है, जिसमें हिन्दी की अलग अलग बोलियों के साथ फारसी ,तुर्की और स्थानीय भाषा के शब्दों को देखा जा सकता है। अध्यायन से पता चलता है कि ' भोगबल ' के रचनाकार 'कुरैसी बीदरी प्रथम रचनाकार हैं जिन्हों ने अपनी भाषा को दक्खिनी कहा है -

"सो इस शाह के दौरे में बदिर मुकाम,
यो शायर किया नज्म दक्खिनी तमाम।' ' 2

मुल्ला वजहीने दक्खिनी हिन्दी की प्रसिद्ध रचना ' कुतुब मुश्तरी 'में अपनी भाषा को दक्खिनी कहा है-

" दखन में जूँ दखनी मीठी बात का ,
अदा नै किया कोयी इस घात का।' ' 3

दक्खिनी हिंदी के शासक तथा कवि दक्षिण के मिट्टी से जुड़े हुए थे कुछ-कुछ शासक तो हिंदू माताओं के गर्भ से जन्मे थे। अतः वह उत्तर भारत के मुस्लिम शासकों के समान अधिक कट्टर नहीं थे साथ ही दक्षिण के अधिकतर शासक संगीत प्रेमी एवं कवि और कलाकार भी थे। उन्होंने साहित्य की साधना के साथ-साथ आकर्षक वास्तु शिल्पों का निर्माण भी किया है। यही कारण है कि यहां की जनता इन शासकों के प्रति आश्वस्त थी। उन्हें विश्वास था कि वह उनके धर्म एवं संप्रदाय के बीच कभी कोई दीवार खड़े नहीं करेंगे। दकनी के प्रसिध्द साहित्यकार मुल्ला वजही अपनी प्रसिद्ध रचना सबरस में हिंदू-मुस्लिम सामंजस्य और एकता की बात करते हैं। वे लिखते हैं - **सद है मुर्शीद है, मुसलमानों में पीर मुर्शिद होएगा , हिंदुओं में जंगम सद होएगा, हम हिंदू तुझ ते बात पाकर मानेंगे, हम मुसलमान तुझे बड़ाकर जायेंगे, एक कलमे का फर्क है, बाकी खुदा की वहदियत में हिंदू मुसलमान गर्क हैं। 4**

दखनी के साहित्यकारों ने हमेशा अपनी मातृभूमि और अपने राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान की बात की है। कई बार इन साहित्यकारों ने दक्षिण के शहरों का उल्लेख तत्कालीन समय के प्रगत अरब शहरों (बुखारा, समरकंद, मुलतान, बसरा, बगदाद आदि)से किया है। ऐसे ही दखनी के प्रसिद्ध साहित्यकार शाहतुराब अपनी रचना मन समझावन में कहते हैं-

जो बांद लंगोटा लगत खाक तन कांे, दिया छोड़ यक बार हब्बुलवतन कांे,
जला इश्क की बाट में माल व धन कांे, रखे कांॅस न पास परगट कफन कांे,
अरे मन इसे क्या है दुनिया का आसा, लिया हाथ में भीक का जिसने कांॅझा 5

अर्थात एक बार जब कोई व्यक्ति अपने कमर को लंगोट बांधकर और तन पर राख लगाकर अपनी मातृभूमि के बाहर निकल जाता है तब उसे संसार की कोई आस नहीं रहती। वह अपने हाथ में भीख मांगने के लिए कासे का कटोरा ले लेता है। यही कार्य तत्कालीन समय के सूफी साहित्यकारों ने किया था। उन्होंने मानवता को जगाने के लिए संसार के सभी सुखों का त्याग कर दिया था। सूफी फकीरों के साथ ही दक्षिण भारत के मुस्लिम शासक भी हिंदू-मुस्लिम भेद को मिटा कर लोगों में एकता का भाव निर्माण करते थे।

एक जगह पर उल्लेख आता है कि हजरत निजामुद्दीन ओलिया के शिष्य शाह बुरहानुद्दीन गरीब के साथ 14 सौ पालकियां दक्षिण भारत के शहर खुल्दाबाद आई थी। अर्थात शाह बुरहानुद्दीन गरीब के साथ दक्षिण भारत में 14 सौ सूफी संत दक्षिण भारत में आए थे। इन्हीं के बदौलत आज दक्षिण भारत-उत्तर भारत के मुकाबले ज्यादा सहिष्णु दिखाई देता है। यह 1400 सूफी संत भारत के छोटे बड़े शहरों में मानवता का संदेश लेकर पहुंचे। उन्होंने अपना संदेश शांतिपूर्ण मार्ग से दिया। कभी-कभी तो तत्कालीन शासक के साथ भी इनकी अनबन हुई किंतु यह आपने इरादे से और कर्म से पीछे नहीं हटे। परिणाम स्वरुप वे दक्षिण भारत में सांस्कृतिक एकात्मता को स्थापीत करने में सफल हुए। यही कारण है कि आज हमारे-आपके आसपास के गांव और शहरों में सूफी संतों की दरगाह या मजार दिखाई देते हैं। जहाॅ पर सभी धर्म और संप्रदाय के लोग इकट्ठा होकर दुआएं मांगते हैं। इनके शांतिपूर्ण संदेश के कारण ही विशेष रुप से दक्षिण प्रदेश में अमन का माहौल स्थापीत हो गया। इस संबंध में हिंदी के राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर कहते हैं-
असली मुसलमान सीमित संख्या में ही दक्षिण गए थ,े बाकी मुसलमान वही थे जो हिंदू वंशों से आए थे यहां विदेशी मुसलमान भी कम पहुंचे थे अतः इस्लाम की सांस्कृतिक कट्टरता यहां अपेक्षाकृत अधिक ढीली थी।-6

इस कथन की पुष्टि तब और भी हो जाती है जब हम यहां के शासकों के जीवनी पर दृष्टि डालते हैं। सर्वप्रथम तो अलाउद्दीन खिलजी के भतीजे का विवाह देवगिरि के राजा रामदेवराय की बेटी देवलदेवि से हुआ था आगे चलकर उसी की संतानों ने खिलजी वंश की बागडोर चलाई। इसके बाद बीजापुर और गोलकुंडा के कई शासकों के एवं राजकुमारों के विवाह हिंदू राजकुमारियों के साथ हुए थे। गोलकुंडा के प्रसिद्ध शासक एवं दक्खिनी के प्रतिष्ठित कवि कुली कुतुबशाह का विवाह भी एक आदिवासी लड़की भागामति से हुआ था। इसी की याद में हैदराबाद का चारमीनार बनवाया गया तथा आज का हैदराबाद शहर भी इसी वजह से बसाया गया था। इसके अलावा फिरोज का विवाह भी विजयनगर की राजकुमारी से हुआ था। यही वजह है कि दक्खिनी हिंदी में हमें हिंदू संस्कृति के कई रूप देखने को मिलते हैं। सही मायने में

Arts Science & Commerce College Naldurg

दक्षिण की हिंदू संस्कृति को तत्कालीन समय की भाषा दक्खनी ने अपने साहित्य के माध्यम से जिंदा रखा। साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से तत्कालीन संस्कृति, रीति-रिवाज, परंपराएं आदि को तो व्यक्त किया। साथ ही अपने वतन दख्खन से प्रेम करने से भी वह पीछे नहीं हटे, अपनी मातृभूमि का उल्लेख दक्खिनी के कवियों ने कई जगह पर गौरव के साथ किया है। मुल्ला वजही कहते हैं -

दकन सा-नहीं ठार संसार में, पंच फाजिलां का है इस ठार में।
दखन है नगीना अंगूठी है जग, अंगूठी कूं हुरमत नगीना है लग।
दखन मुल्क कूं धन अजब साज है, के सब मुल्क सर होर दखन ताज है।
दखन मुल्क बोतीच खासा अहै, तिलंगाना इसका खुलासा अहै। 7

दक्खिणी के मराठी विद्वान डॉक्टर इकबाल तंबोळी दखनी वांग्मयाचा इतिहास नामक अपने ग्रंथ में लिखते हैं, **विजापूर राज्याचा संस्थापक युसूफ आदिलशाह हा महमूद गवानचा शिष्य होता तो फारसी भाषेचा विद्वान होता। त्याची पत्नी महाराष्ट्रातील इंदापूरचे मराठा सरदार मुकुंदराव यांची बहिण होती। तीच्या कडूनच त्यानां इस्माइल आदिलशाह हा मुलगा झाला, तोच विजापूरचा पूढिल शासक बनला। 8** अर्थात बीजापुर राज्य का संस्थापक शासक युसूफ आदिलशाह , महमूद गवान का शिष्य था जिसने बीजापुर में अपना स्वतंत्र राज्य निर्माण किया था। इनका विवाह महाराष्ट्र के मराठी भाषी इंदापुर के मराठा सरदार मुकुंदराव की बहन से हुआ था। उन्हीं से उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम इस्माइल आदिलशाह था। यही आगे चलकर बीजापुर का शासक बना। यही कारण था कि दखनी में मराठी , कन्नड और तेलुगू भाषा के कई शब्द दिखाई देते हैं। शासक जनभाषा का प्रयोग अपने रोजमर्रा के कामकाज में करते थे। इस कारण से यह भाषा आम लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करती जिसके कारण इसमें राष्ट्रीय एकात्मता के गुण हमें दिखाई देते हैं।

दक्खन के सभी शासक ईस्लाम धर्म के अनुयाई होते हुए भी उन्होंने बहुसंख्य हिन्दू प्रजा के देवी देवताओं के प्रति आदर भाव प्रकट किया है उनकी स्तुति की है। जो उनकी धार्मिक उदारता को स्पष्ट करती है। ईब्राहिम आदिलशहा द्वितीय 'जगतगुरु' ने किताबे नौरस में हिन्दू देवी देवताओं का वर्णन करते हुए भगवान शिव के विषय में लिखते हैं-

" दुरमुकाम भैरव नौरस
भैरव करपूत गौरा भाल तिलक चन्दरा
तिरी नेत्र जटा कुकुट गंगा धरा
एक हस्त रुंड नरा त्रिशुल जुगल करा
ब्हन बालि वरुद (वर्ध) सीत जात गुसाई ईश्वरा,
कास कुरुत कुँजर पृष्ठ चर्म वयाग्रा ।' ' 9

मराठी संत एकनाथ का हिंदी पद विख्यात है जिसमें वे भक्त से कहते

Arts Science & Commerce College Naldurg

अल्ला रखेगा वैसा भी रहना।
मौला रखेगा वैसा भी रहना।।

वली औरंगाबादी ने भारतीय जीवन के ठेरों चित्र अपनी कविताओं में उकेरे हैं। जिसमें हिंदू धर्म के नायक, महानायक या पवित्र स्थानों का उल्लेख किया हुआ दिखाई देता है। गंगा, जमुना, कृष्ण, राम, सरस्वती, सीता, लक्ष्मी इन सबके संदर्भ इनकी कविता में सहजता से आते हैं।

अय सनम तुज जबीन उपर ये खाल
हिंदु ये हरद्ववार बासी है
गरचे लचमण तेरा है राम वे
अय सजन तु किसी का राम नहीं।।

औरंगाबाद के ही निवासी निपट निरंजन की बानी समन्वयवादिता से भरपूर दिखाई देती है। औरंगजेब और निपट निरंजन के संवाद तो बेहद सहज है जिसमें दक्खिनी हिंदी का प्रयोग किया गया है।

पढ़ता वेद पुरान जानता था भेद बहू
पढ़ता था व्याकरण, मूल्ला व्यास के समान है ।
जवूर तौरेत बायबल कुरान शरीफ
पढ़के न तूने किया अपना पहचान है ।।
कई सून्नीयों में खेला कई स्त्रीया को झमेंला,
कई शेख सैयद औ मूगल पठान है ।
कै 'निपट निरंजन' सूनो आलमगीर,
दोजख जन्नत यह आमालों की खान है ।।10

निष्कर्ष :

मराठवाड़ा के औरंगाबाद, जालना, परभणी, नांदेड, हिंगोली, लातुर, बीड और उस्मानाबाद जिले के प्रत्येक तहसिल के दायरे में कई सूफी संतों की मजारें आज भी सामाजिक एकता का संदेष देती हुई हमें दिखाई। यही वही सूफी संत है जिन्होंने आजिवन सामाजिक सौहार्द्रता का संदेष दिया था। उनके साहित्य में तत्कालीन समाज का चित्रण दिखाई देता है। लगभग सभी साहित्यकारों के साहित्य में राष्ट्रीय एकता, देषप्रेम, सामाजिक सौहार्द, षांति, प्रकृति प्रेम, बंधुत्व, मिलनसार वृत्ति आदि दिखाई देता है।

संदर्भ संकेत

1 दक्खिनी हिंदी भाषा और साहित्य डा मुहम्म्द कुंज मेत्तर पृ. 19

Arts Science & Commerce College Naldurg

2 पितरनामा - बिदरी - सं. मसूद हुसैन खाँ पृ.324
3 कुतुब मुश्तरी - मुल्ला वजही ,सं. नसीरोद्दीन हाशमी पृ.29
4 सबरस मुल्ला वजही नागरी आवृति पृ. 10
5 मन समझावन शाहतराब नागरी आवृति पृ. 32
6 संस्कृति के चार अध्याय रामधारीसिंह दिनकर पृ. 377
7 कुतुब मुश्तरी मुल्ला वजही नागरी आवृति पृ. 13
8 दखनी वाग्मयाचा इतिहास डॉ. ई.जा. ताबोळी पृ. 12
9 दक्खिनी हिन्दी काव्य संचयन- संपादक- परमानंद पांचाल, पृष्ठ क्रमांक-317
10 निपट निरंजन की बानी - सं. राजमल बोरा, पृष्ठ क्रमांक **70**

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413602